

## मध्यान्ह भोजन योजना का एक सूक्ष्मआयामी मूल्यांकन (तहसील बीसलपुर, जिला पीलीभीत, उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में)

<sup>1</sup> Dr Mohammad Israr Khan, <sup>2</sup> Rajkumri

<sup>1</sup> Assistant Professor, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

<sup>2</sup> Research Scholar, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

### सारांश

मध्यान्ह भोजन योजना अखिल भारतीय स्तर पर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सार्वभौमिक प्रवेश, सार्वभौमिक उपस्थिति एवं सार्वभौमिक अधिगम स्तर प्राप्त करने हेतु सरकारी स्तर पर एक अत्याधिक महत्वपूर्ण एवं महत्वाकांक्षी हस्तक्षेप है। मध्यान्ह भोजन योजना शैक्षिक योगदान के अतिरिक्त बाल पोषाहार तथा भुखमरी एवं गरीबी निवारण हेतु भी अति महत्वपूर्ण व्यवस्था है। प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर निदर्शतया चयनित एक सौ प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक छात्र-छात्राओं तथा संबंधित विद्यालयों से प्राप्त सूचना/आंकड़ों का प्रयोग करते हुए मध्यान्ह भोजन योजना के क्रियान्वयन शैक्षिक प्रभाव, सामाजिक स्वास्थ्य आदि पहलुओं का छात्र-छात्राओं के दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतया मध्यान्ह योजना प्राथमिक शिक्षा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। किन्तु छात्रों की सहभागिता, स्वच्छता, समय उपयोग सामाजिक योगदान आदि चरों पर प्रभावी ध्यानकर्षण की आवश्यकता है।

**मूलशब्द:** स्वास्थ्य, भूख, सार्वभौमिक नामांकन, सार्वभौमिक उपस्थिति, सार्वभौमिक अधिगम, सीखने का व्यवहार, सीखने का स्तर।

### 1. प्रस्तावना

मध्यान्ह भोजन योजना सर्वप्रथम आजादी से पहले मद्रास नगर निगम द्वारा 1925 में प्रारम्भ की गयी थी। 1980 के मध्य में यह गुजरात, केरल, तमिलनाडू और पाण्डुचेरी में भी प्रारम्भ कर दी गयी। 1990-91 में यह योजना 12 और राज्यों में प्रारम्भ की गयी। 15 अगस्त 1995 से मध्यान्ह भोजन योजना राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत 2,408 विकासखण्डों में निःशुल्क खाद्यान्न की व्यवस्था की गयी। इसके अन्तर्गत कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के लिये 80 प्रतिशत उपस्थिति पर प्रतिमाह तीन किलो ग्राम गेहूँ अथवा चावल दिये जाने की व्यवस्था थी। इस योजना के अन्तर्गत खाद्यान्न का पूर्ण लाभ छात्रों को न मिलकर परिवार के मध्य बंट जाता था, जिससे छात्रों को पौष्टिक तत्व कम मात्रा में प्राप्त होते थे। 1997-98 में सभी विकासखण्डों में तैयार मध्यान्ह भोजन योजना ंडकड्ड को लागू किया गया।

01 सितम्बर 2004 से सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार 3,479 पिछड़े विकासखण्डों में 8वीं कक्षा तक के छात्रों के लिए पका पकाया भोजन सरकारी विद्यालयों में उपलब्ध कराया जा रहा है। वर्तमान समय में इस योजना से प्रदेश के 1,14,256 प्राथमिक विद्यालयों एवं 54,155 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के क्रमशः 1.83 करोड़ तथा 57.70 लाख विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। 2008-09 से सभी सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में 8वीं कक्षा तक के छात्रों के लिए तैयार मध्यान्ह भोजन योजना ंडकड्ड लागू है।

मध्यान्ह भोजन व्यवस्था एक व्यापक स्तर पर चलाया जा रहा कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य है बच्चों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना, जिससे बच्चों में शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता विकसित हो सके, विद्यालयों में छात्र संख्या बढ़ाना, विद्यालय में छात्रों के रूकने की प्रवृत्ति विकसित करना तथा झ्रप आउट रेट कम करना तथा

बच्चों में भाईचारे की भावना विकसित करना। प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध कराए जा रहे भोजन में कम से कम 450 कैलोरी ऊर्जा व 22 ग्राम प्रोटीन एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कम से कम 700 कैलोरी ऊर्जा एवं 20 ग्राम प्रोटीन उपलब्ध कराया जा रहा है। वर्तमान में 10.8 करोड़ बच्चे प्रतिदिन मध्यान्ह भोजन योजना से लाभान्वित हो रहे हैं। समस्त भारत के 29 राज्यों में से 5 राज्यों में 50 लाख से अधिक छात्र प्रतिदिन इस योजना का लाभ उठा रहे हैं, जो इस प्रकार हैं:- बिहार में 136.3 लाख, पश्चिम बंगाल में 120.3 लाख, उत्तर प्रदेश में 102.5 लाख, महाराष्ट्र में 95.4 तथा मध्य प्रदेश में 64.1 लाख बच्चे। तमिलनाडु, उड़ीसा, कर्नाटक, राजस्थान, गुजरात तथा असम में लगभग 40-50 लाख बच्चे मध्यान्ह भोजन योजना से लाभान्वित हो रहे हैं। शेष राज्यों में मध्यान्ह भोजन योजना से लाभ प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या निम्न प्रकार है-

- 20-30 लाख- झारखण्ड, छत्तीसगढ़, आन्ध्रप्रदेश, केरल और तेलंगाना।
- 10-20 लाख- हरियाणा, पंजाब, दिल्ली।
- 5-10 लाख- जम्मू कश्मीर, उत्तराखण्ड, हिमाचल और मेघालय।
- 1-5 लाख- त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड मणिपुर, गोवा तथा मिजोरम।
- 1 लाख से कम- सिक्किम, चण्डीगढ़, पाण्डुचेरी, दमद एवं द्वीप, दादरा एवं नगर हवेली, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह तथा लक्ष्यद्वीप (Times of India, August 6, 2016)A

### 2. मध्यान्ह भोजन योजना की उपयोगिता

भारत में प्राथमिक शिक्षा की चिरकालिक समस्याओं के रूप में बाल आयु वर्ग के सभी बच्चों का विद्यालय में प्रवेश नहीं लेना अथवा हो

पाना, सभी बच्चों की विद्यालय में शत प्रतिशत उपस्थिति नहीं होना तथा विद्यालय में नहीं बने रहना, एवं विद्यालय जाने वाले बच्चों में अपेक्षित अधिगम स्तरों का विकास न हो पाना आदि चरों का प्रमुख स्थान है। सभी के लिये शिक्षा का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है जबकि सभी बच्चे विद्यालय में प्रवेश लें, विद्यालय जाते रहें, तथा पढ़ाई लिखाई में पारंगतता प्राप्त करें। सभी के लिये शिक्षा में अभिभावकों की आर्थिक अभावग्रस्तता तथा परिणामतया बच्चों में परिलक्षित कुपोषण भी अत्याधिक नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। विद्यालय जाने वाले बच्चों के लिये मध्याह्न भोजन व्यवस्था सभी के लिये शिक्षा तथा सभी के लिये स्वास्थ्य जैसे दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक लक्ष्यों की पूर्ति का सार्थक साधन है।

मध्याह्न भोजन व्यवस्था एक व्यापक स्तर पर चलाया जा रहा कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य है बच्चों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना, जिससे बच्चों में शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता विकसित हो सके, विद्यालयों में छात्र संख्या बढ़ाना, विद्यालय में छात्रों के रुकने की प्रवृत्ति विकसित करना तथा ड्राप आउट रेट कम करना तथा बच्चों में भाईचारे की भावना विकसित करना। प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध कराए जा रहे भोजन में कम से कम 450 कैलोरी ऊर्जा व 22 ग्राम प्रोटीन एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कम से कम 700 कैलोरी ऊर्जा एवं 20 ग्राम प्रोटीन उपलब्ध कराया जा रहा है।

स्कूल में मध्याह्न भोजन योजना के शुरू होने से विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है, विद्यालय में छात्रों के रुकने की प्रवृत्ति विकसित हुई है तथा ड्रापआउट रेट में भी कमी आयी है। विभिन्न जाति धर्म के बच्चों के एक जगह पर एक साथ बैठकर खाना खाने से भाईचारे एवं समानता की भावना विकसित हुई है। न्यूनतम पौष्टिक आहार मिलने से अब बच्चों को स्कूल में भूखे नहीं रहना पड़ता है और न ही अब वो स्कूल जाने से डरते हैं और स्कूल जाना चाहते हैं (Mid Day Meal Authority, Uttar Pradesh, <http://www.upmdm.org>)

लेकिन क्या यह अपने सभी उद्देश्यों को पाने में सफल हो पा रहा है? इसमें संदेह है। यह ठीक है कि बच्चों के पोषण स्तर में वृद्धि हुई है और उनकी पंजीकरण संख्या तथा नियमितता में भी वृद्धि हुई है लेकिन बच्चों की पढ़ाई के उद्देश्य को यह पूरा नहीं कर पा रहा है। लगातार पूरा दिन स्कूल में रहने के बाद भी उनकी पढ़ाई का स्तर निम्न है, यह इसकी सीमा को दर्शा रहा है।

यह योजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल हो सके इसके लिये इसकी खामियों का पता लगाकर उनमें सुधार करने की आवश्यकता है। वर्तमान शोधपत्र में मध्याह्न भोजन व्यवस्था के बारे में बच्चों के नजरिये को जानने की कोशिश की गयी है।

### 3. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकर्ता ने मध्याह्न भोजन योजना का सूक्ष्म-आयामी अध्ययन, "मध्याह्न भोजन व्यवस्था के क्रियान्वयन का विश्लेषण, सार्वभौमिक नामांकन, सार्वभौमिक उपस्थिति, सार्वभौमिक अधिगम, उपलब्धियों पर मध्याह्न भोजन व्यवस्था के प्रभाव का अध्ययन तथा मध्याह्न भोजन व्यवस्था के प्रति छात्र-छात्राओं के दृष्टिकोण का अध्ययन" सरीखे उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये किया है।

मध्याह्न भोजन योजना का अध्ययन करने के लिये शोधकर्ता ने सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर एक सौ छात्र-छात्राओं से जानकारी ली है। 100 बच्चों के न्यादर्श में 57 लड़कियाँ और 45 लड़के हैं जिनमें से 20 बच्चे अनुसूचित जाति, 69 बच्चे अन्य पिछड़ा वर्ग और 11 बच्चे सामान्य वर्ग के हैं।

### 4. बोध साहित्य समीक्षा :-

देवधर, महेद्रता, रमणी, मावलाकर, घोष, एवं ब्रगेन्जा (2010) ने मध्याह्न भोजन योजना की कई स्तरों पर जांच की है, जैसे कि प्रयोगशाला परीक्षण, साक्षरता दर, गरीबी निवारण दर पौष्टिकता परीक्षण, परिणामतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि कुछ सुधारों जैसे कि सार्वजनिक निजी साझेदारी आवर्ती निरीक्षण आदि के द्वारा मध्याह्न भोजन योजना की कमियों को दूर करते हुए चालू रखना चाहिए। पॉल एवं मण्डल (2010) का यह शोधपत्र पश्चिम बंगाल के बर्धवान जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शिक्षण पर मध्याह्न भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन करता है। काई वर्ग परीक्षण, बहुगुणी प्रतीक गमन के परिणाम तथा टी- परीक्षण इत्यादि से यह प्रदर्शित हुआ कि मध्याह्न भोजन योजना उपस्थिति बढ़ाने, नामांकन बढ़ाने, विद्यार्थियों का स्कूल छोड़ना, भुखमरी मिटाने सामाजिक और लैंगिक समानता बढ़ाने इत्यादि पर धनात्मक प्रभाव डाला है। सन्तुष्टिपूर्ण परिणाम प्राप्त करने के लिए मध्याह्न भोजन योजना को स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों से जोड़ने की आवश्यकता महसूस की गयी। बाण्ड्स स्टीफन (2012) ने चतुर्विधमदबपजल 'बवतम डंजबीपदह डंजीवक तथा भारत के 2004 के सामाजिक आर्थिक निरीक्षण के आंकड़ों पर मध्याह्न भोजन के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि मध्याह्न भोजन योजना निम्न आय वाले परिवारों के बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा पहुंचाने में मदद कर रही है। उमा (2013) के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य मात्र सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों का नामांकन, उपस्थिति, तथा स्वास्थ्य बढ़ाना है जबकि गुणवत्तापरक शिक्षा बिल्कुल गायब है।

लाथ राहुल (2006) ने इस शोधपत्र में मध्याह्न भोजन योजना को स्कूलों में बच्चों के नामांकन एवं उपस्थिति बढ़ाने का जरिया मानते हुए बताया है कि बच्चों को पोषण युक्त आहार प्रदान करने के लिए इसे सही एवं उचित स्थानों पर लागू किया जाये इसके साथ वह स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम को भी आवर्ती जांच एवं नई तकनीक से सम्बद्ध करने को कहता है। भार्गव माधवी, काण्डपाल एस0डी0, अग्रवाल प्रदीप, सेटी एच0 (2014) ने पाया कि मध्याह्न भोजन योजना से सरकारी विद्यालयों के बच्चों को पोषण मिल रहा है परन्तु बड़े बच्चे मध्याह्न भोजन योजना को नजर अंदाज कर रहे हैं। उच्च स्तरीय समाज के बच्चे में मोटापा बढ़ रहा है जो कि अपने बच्चों को निजी स्कूल में पढ़ाते हैं एवं तेलीय भोजन का सेवन कराते हैं। अतः इस शोधपत्र के अनुसार सन्तुलित आहार पर एक अच्छे शोध की जरूरत है।

रामटेक वन्दना (2015) ने नागपुर शहर के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्र के स्कूलों पर अध्ययन करके पाया कि मध्याह्न भोजन योजना नामांकन बढ़ाने, उपस्थिति बढ़ाने, अच्छी आदतें बढ़ाने, और कक्षा में भूख को मिटाने इत्यादि में कारगर सिद्ध हुआ है पर शिक्षकों पर अत्यधिक बोझ के कारण उनके शिक्षण कार्य में एक बाधा भी है। वर्मा ललित (2015) के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना में मिलने वाले भोजन में पौष्टिकता की कमी है जिसे सारगर्भित किया गया है और योजना के अतिरिक्त प्रभावी ढंग से कार्यान्वयन के लिए कहा गया है। भाटिया रचना, अइयर उमा (2016) ने पाया कि मध्याह्न भोजन योजना में रसोइया के रूप में मुख्यतः दीन-हीन विधवा प्रकार की महिलाओं को रखना उन्हें रोजगार देने के बराबर है और इससे बच्चों के नामांकन एवं उपस्थिति में भी वृद्धि हुई है समस्या केवल बच्चों को पोषण युक्त भोजन के वितरण की सही देखभाल की है। सिंह मंजू, मिश्रा निरंजन (2010) के शोधपत्र के अनुसार विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का मध्याह्न भोजन योजना को प्रभावी बनाने में सक्रिय योगदान होना चाहिए। योजना को अधिक प्रभावी बनाने के लिए तीन आयाम (बहाव, सूचना एवं विकास) जरूरी है।

पी0ई0ओ0, जी0ओ0आई0 (2010) ने मध्यान्ह भोजन योजना का निष्पादन मूल्यांकन 17 राज्यों के 48 जनपदों के 480 स्कूलों में 19 विभिन्न स्तरों (राज्य, जिला ब्लाक, ग्राम, स्कूल, माता-पिता, लाभग्राही, उत्तराधिकारी, स्कूल के बाहर, नामांकन रद्द) पर बहुस्तरीय यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा तैयार किया है। इसके अनुसार कुछ सम्भाविक घटक मध्यान्ह भोजन योजना के कार्यान्वयन को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं, जोकि संक्षेप में इस प्रकार हैं— नोडल मंत्रालय द्वारा बैठक, समीक्षा, अन्य स्कीमों का समामेलन जिला स्तरीय एवं ब्लाक स्तरीय बैठक, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के व्यापारी से सीधे सुपुर्दगी, हेडमास्टर द्वारा बत्वे बेमबापदह (वज्र जांच), कार्यान्वयन अधिकारी के खाते में फण्ड हस्तान्तरण, कार्यान्वयन अधिकारी को शुद्धता तथा स्टॉफ को वितरण की जिम्मेदारी, स्वयं सहायता समूह को या स्कूली बच्चों की माताओं को कार्यान्वयन अधिकारी के रूप में नियुक्त करना, हर छः माह में कीमतों की समीक्षा करना, वितरण के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी लागू करना। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (2009) ने निम्न टिप्पणियाँ की हैं :

1. मध्यान्ह भोजन योजना में कई कमियाँ हैं जैसे कि कार्य योजना बनाने के लिए सबसे निचले स्तर पर कोई सर्वेक्षण नहीं होता जिससे कि गलत नामांकन सूची प्राप्त होती है और वार्षिक कार्य योजना में या तो अधिक या कम बजट तैयार होता है।
2. मध्यान्ह भोजन का मुख्य उद्देश्य पूरा नहीं हो पा रहा है, क्योंकि राज्यों के द्वारा कोई नामांकन उपस्थिति इत्यादि का कोई विश्व स्तरीय आकाड़ा उपलब्ध नहीं कराया जाता है।
3. सम्यक् लेखांकन हेतु विश्व स्तरीय प्रणाली का आभाव है, जिससे कि एक तरफ अनाज बच्चों तक पहुंच नहीं पाता और दूसरी तरफ अनाज अधिक भण्डारण की बजह से सड़ता है। भोजन में विभिन्नता उपलब्ध कराने के लिए कोई भी निश्चित व्यवस्था राज्य सरकारों द्वारा तैयार नहीं की गयी है।
4. स्कूल प्रबंधन को षण्डवण्डण कार्यान्वयन में किसी का साथ नहीं मिलता, न ग्राम पंचायत का, न ग्रामीण शिक्षा समिति का, न अभिभावकों का क्योंकि बैठकों का कोई आंकड़ा ही उपलब्ध नहीं है। क्षेत्रावार बच्चों की स्वास्थ्य कमियों को जांचा नहीं जाता।

**5. विश्लेषण**

**5.1 न्यादर्श विवरण**

मध्यान्ह भोजन व्यवस्था का विश्लेषण बच्चों के नजरिए से करने के लिये शोधकर्ता ने 100 बच्चों का न्यादर्श लिया है और उनसे घर घर जाकर बात की। 100 बच्चों के न्यादर्श में 57 लड़कियों और 43 लड़के हैं, जिनमें से 20 बच्चे अनुसूचित जाति, 69 बच्चे अन्य पिछड़ा वर्ग और 11 बच्चे सामान्य वर्ग के हैं।

**तालिका संख्या 1:** न्यादर्श विवरण

|                 |                   |            |
|-----------------|-------------------|------------|
| कक्षा -         | 1 से 8 तक         | कुल - 100  |
| स्त्री -        | 57                | पुरुष - 43 |
| जाति-           | अनुसूचित जाति-20, | अन्य       |
| पिछड़ा वर्ग-69, | सामान्य वर्ग-11   |            |

स्त्रोत- सर्वेक्षण।

**5.2 मध्यान्ह भोजन व्यवस्था के अन्तर्गत साप्ताहिक मेन्यू**

मध्यान्ह भोजन व्यवस्था के अन्तर्गत प्रत्येक छात्र को प्रत्येक सप्ताह 4 दिन चावल और दो दिन गेहूँ से बने भोज्य पदार्थ दिये जाने की व्यवस्था है। इसके लिए भारत सरकार द्वारा 100 ग्राम प्रति छात्र प्रति दिवस एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर 150 ग्राम प्रति छात्र प्रति

दिवस की दर से खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है। मध्यान्ह भोजन तैयार करने एवं अन्य सामग्रियों की व्यवस्था करने के लिये वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर पर रू0 3.46 प्रति छात्र प्रति दिवस तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर रू0 5.64 प्रति छात्र प्रति दिवस परिवर्तन लागत के रूप में उपलब्ध कराया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालयों में प्रति छात्र प्रति दिवस कम से कम 450 कैलोरी ऊर्जा व 12 ग्राम प्रोटीन एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कम से कम 700 कैलोरी ऊर्जा व 20 ग्राम प्रोटीन भोजन में उपलब्ध कराया जा रहा है।

**तालिका संख्या 2:** मध्यान्ह भोजन व्यवस्था के अन्तर्गत साप्ताहिक मेन्यू

| दिन         | मेन्यू   |
|-------------|--|
| सेमवार      | रोटी- सोयाबीन/ दाल की बड़ी युक्त सब्जी                                   |
| मंगलवार     | चावल - दाल   |
| बुधवार      | तहरी एवं दूध (दूध प्रा0वि0 हेतु -150 मिली0 व उ0 प्रा0 वि0 हेतु 200मिली0) |
| बृहस्पतिवार | रोटी -दाल  |
| शुक्रवार    | तहरी   |
| शनिवार      | चावल सोयाबीन युक्त सब्जी।  |

स्त्रोत - रामदुलारी श्याम सुन्दर इण्टर कॉलेज, बीसलपुर, पीलीभीत से प्राप्त प्राथमिक जानकारी।

**5.3 मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता इत्यादि**

1. खाना खाने में कैसा लगता है?  
अच्छा-82: खराब-18:
2. क्या आपको स्कूल में भरपेट खाना मिलता है?  
हाँ-87: नहीं-13:
3. क्या स्कूल में आपको हमेशा साफ खाना मिलता है?  
हाँ-86: नहीं-14:
4. क्या खाना आप घर पर भी ले जाते हैं?  
हाँ-0: नहीं-100:
5. क्या आप स्कूल में सिर्फ खाना बंटने के समय ही जाते हैं?  
हाँ-0: नहीं-100:
6. क्या आपके साथ ऐसे बच्चे भी खाना खाने जाते हैं, जिनका स्कूल में नाम नहीं लिखा है?  
हाँ-0: नहीं-100:
7. क्या खाना खाने के लिये आप बर्तन घर से लेकर जाते हैं?  
हाँ-91: नहीं-9?:
8. क्या स्कूल का खाना खाने से आपके स्कूल में कोई बीमार पड़ा है?  
हाँ-0: नहीं-100:
9. क्या स्कूल में खाना दिया जाना चाहिए?  
हाँ-94: नहीं-6:

**5.4 खाने की गुणवत्ता:**

(क) सर्वेक्षण का विश्लेषण करने से पता लगता है कि 82: बच्चे ऐसे हैं जिन्हें स्कूल का खाना खाने में अच्छा लगता है। 87: बच्चों का कहना है कि उन्हें भरपेट खाना मिलता है।

(ख) 86: बच्चे कहते हैं कि उन्हें स्कूल में हमेशा ही साफ खाना मिलता है। स्कूल में जो भी खाना मिलता है उसे कोई भी बच्चा घर पर नहीं लाता, वे सारा खाना स्कूल में ही समाप्त करते हैं।

(ग) सारे बच्चे समय से स्कूल जाते हैं और छुट्टी का समय होने पर ही घर वापस आते हैं कोई भी बच्चा सिर्फ खाना मिलने के समय पर स्कूल नहीं जाता है। स्कूल में कोई भी ऐसे बच्चे खाना खाने नहीं जाते जिनका स्कूल में पंजीकरण नहीं हुआ है।

(घ) 91: बच्चे खाना खाने के लिये बर्तन घर से लेकर जाते हैं, केवल 9: बच्चे ही बिना बर्तन लेकर स्कूल जाते हैं, उनको बर्तन की सुविधा स्कूल से ही उपलब्ध करवाई जाती है।

(ड) शोध अध्ययन में लिये गये 100: बच्चों के अनुसार उनके स्कूलों में स्कूल का खाना खाने से आज तक कोई बीमार नहीं पड़ा है। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

(च) लगभग 94: बच्चे यह चाहते हैं कि उन्हें हमेशा ही स्कूल में खाना मिलता रहे। केवल 6: बच्चे ही चाहते हैं कि स्कूल में खाना मिलना बंद हो जाए। क्योंकि उन्हें स्कूल का खाना खाने में अच्छा नहीं लगता, इस अध्ययन से यह पता लगता है कि लगभग सारे बच्चे, स्कूल में खाना मिलने की वजह से जाते हैं।

### 5.5 समय

स्कूल में खाना बंटने और खाने में लगभग एक घंटे का समय लगता है।

### 5.6 स्वच्छता ;समंदसपदमेद्ध

1. क्या खाना बंटने से पहले हाथ धुलवाए जाते हैं?

हाँ-63: नहीं-37:

2. पानी का साधन क्या है?

नल-100:

स्कूल में खाना बंटने से बच्चों में खाना बंटने से पहले और खाना खाने के बाद हाथ धुलने की अच्छी आदत विकसित हो रही है। लगभग 63: बच्चे कहते हैं कि उनके शिक्षक उनसे खाना खाने से पहले हाथ धुलने के लिये कहते हैं। जबकि 37: बच्चे ऐसे हैं जो कहते हैं कि उनके शिक्षक उनसे हाथ धुलने के लिये नहीं कहते हैं।

सारे ही स्कूलों में पानी के लिये इण्डिया मार्का हैण्डपम्प लगा हुआ है।

### 5.7 भेदभाव ;कपेबतपउपदंजपवदद्ध

1. क्या आपके शिक्षक कुछ बच्चों का ज्यादा ध्यान रखते हैं?

हाँ-38: नहीं-62:

2. क्या आपके साथ आपके शिक्षक भी खाना खाते हैं?

हाँ-38: नहीं-62:

लगभग 38: बच्चों का कहना है कि उनके शिक्षक स्कूल में बच्चों से भेदभाव करते हैं, जो कि बहुत ही बड़ी कमी है। स्कूल में बच्चों के लिये जो खाना मिलता है वो सारे शिक्षक नहीं खाते हैं, केवल 38: शिक्षक ही बच्चों के साथ खाना खाते हैं।

### 5.8 अधिगम व्यवहार ;समंतदपदह ठमीअपवनतद्ध

1. मध्यान्ह अन्तराल से पहले कितने विषय पढ़ाए जाते हैं?

निश्चित नहीं

2. मध्यान्ह अन्तराल के बाद कितने विषय पढ़ाए जाते हैं?

निश्चित नहीं

3. स्कूल में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था से आपकी पढ़ाई पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अ) कोई प्रभाव नहीं 6: ब) खराब 94:

4. पढ़ाई के अलावा क्या कार्य करते हैं?

अ) खेती - 1: ब) कोई काम नहीं-99:

• किसी भी बच्चे को यह जानकारी नहीं है कि स्कूल के समय में कुल कितने घंटे लगते हैं या कितने विषय पढ़ाये जाते हैं। इससे पता चलता है कि स्कूलों में पढ़ाई के लिये कोई

निश्चित समय सारणी नहीं बनायी गयी है जिससे समयबद्ध पढ़ाई नहीं होती है तथा बच्चों का ध्यान पढ़ाई से भटकता रहता है।

• स्कूल में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था से बच्चों की पढ़ाई पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका एहसास शायद बच्चों को नहीं है, जिसकी वजह से वह इस प्रश्न का जवाब नहीं दे पाते हैं।

• केवल एक बच्चा ऐसा था जो पढ़ाई के अलावा खेतों पर काम करता था।

### 5.9 अधिगम स्तर

बच्चों को उनकी किताबें पढ़वाने से पता चलता है कि उनका सीखने का स्तर बहुत ही निम्न स्तर का है, उनको अपनी किताबें ही नहीं पढ़नी आती। वो बच्चे अपनी ही किताबें नहीं बल्कि नीचे कक्षा की किताबें भी पढ़ना नहीं जानते।

तालिका संख्या 3 (अधिगम स्तर के अभिक्रियात्मक तथा निदर्ष पाठन आधारित मूल्यांकन) को देखने से पता चलता है कि गणित हिन्दी और अंग्रेजी को मिलाकर लगभग 71: छात्र ऐसे हैं जिनका व ग्रेड है (इसका मतलब उन बच्चों को अक्षर पहचानना तक नहीं आता) लगभग 10: बच्चे ऐसे हैं जिनको। ग्रेड मिला है। B और C ग्रेड पाने वाले बच्चों का प्रतिशत भी क्रमशः 6.33: और 12.67: है जो कि बहुत कम है।। ग्रेड पाने वाले बच्चों में लगभग 8: बच्चे टयूशन भी पढ़ते हैं जिसका श्रेय स्कूल वालों को नहीं दिया जा सकता।

तालिका संख्या 3: अधिगम स्तर (अभिक्रियात्मक तथा निदर्ष पाठन आधारित मूल्यांकन)

| विषय     | विभिन्न ग्रेड प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या |      |       |     | योग |
|----------|---|------|-------|-----|-----|
|          | I   | ठ    | ढ     | व   |     |
| गणित     | 15  | 7    | 19    | 59  | 100 |
| हिन्दी   | 12  | 7    | 17    | 64  | 100 |
| अंग्रेजी | 3   | 5    | 2     | 90  | 100 |
| योग      | 30  | 19   | 38    | 213 | 300 |
| प्रतिशत  | 10  | 6.33 | 12.67 | 71  | 100 |

स्रोत - अभिक्रियात्मक सर्वेक्षण।

अध्ययन से यह पता चलता है कि स्कूलों में पढ़ाई का स्तर बहुत ही खराब है, जिसमें सुधार की आवश्यकता प्रतीत होती है।

### 6. प्राप्तियां

#### 6.1 मध्यान्ह भोजन योजना का सार्वभौमिक नामांकन, सार्वभौमिक उपस्थिति तथा सार्वभौमिक अधिगम स्तर पर प्रभाव

मध्यान्ह भोजन योजना के लागू होने से प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षा में सार्वभौमिक नामांकन एवं सार्वभौमिक उपस्थिति पर धनात्मक प्रभाव पड़ा है, अर्थात् इससे स्कूलों में बच्चों के नामांकन एवं उपस्थिति स्तर में वृद्धि हुई है। परन्तु सार्वभौमिक अधिगम स्तर में कोई खास वृद्धि नहीं हुई है।

प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले लगभग सारे ही बच्चे निम्न आय वर्ग से सम्बन्धित हैं जिनके मुखिया मजदूरी करते हैं तथा अपने बच्चों को शिक्षा दिलवाने में असमर्थ हैं। शोध में लिये गये न्यादर्श में लगभग 69: बच्चे अन्य पिछड़ा वर्ग से हैं।

• स्कूल में एक वक्त का खाना मिलने से बच्चों की पोषणीयता में वृद्धि हुई है। जो बच्चे घर से भूखे आते हैं या स्कूल तक आते-आते भूखे हो जाते थे, अब उन्हें भूखे नहीं रहना पड़ता है। स्कूल में खाना मिलने से वो स्कूल आना पसंद करते हैं।

• स्कूल में मध्यान्ह भोजन मिलने की वजह से बच्चों के पंजीकरण संख्या में वृद्धि हुई है (सर्वेक्षण)। शोध न्यादर्श में

लगभग 57: लड़कियां स्कूल में पंजीकृत हैं। बच्चे अब पूरे समय के लिये स्कूल जाते हैं, वह बीच में ही स्कूल छोड़ के नहीं जाते। अब लगभग सारे बच्चे पूरे समय के लिये स्कूल जाना चाहते हैं तथा जाते भी हैं।

- सभी जातियों के सारे बच्चे मिलकर एक साथ एक जगह पर खाना खाते हैं इससे समानता का भाव उनके मन में बढ़ता है तथा जातिवाद को मिटाने के लिये यह एक बहुत ही अच्छा कदम है।
- स्कूल में मध्याह्न भोजन व्यवस्था से गरीब विधवा महिलाओं को रोजगार मिल रहा है, जिससे वो महिलाएं स्वावलम्बी बन रही हैं तथा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिल रहा है।

## 6.2 मध्याह्न भोजन के प्रति छात्र-छात्राओं का दृष्टिकोण

82: बच्चे ऐसे हैं जिन्हें स्कूल में खाना, खाना अच्छा लगता है। केवल 18: बच्चे ऐसे हैं जिन्हें स्कूल का खाना अच्छा नहीं लगता है। लेकिन 94: बच्चे चाहते हैं कि उन्हें स्कूल में हमेशा खाना मिलता रहे। मध्याह्न भोजन व्यवस्था भारत के गरीब बच्चों को स्कूल की ओर खींचने के लिए एक चुम्बक की तरह कार्य करता है। बच्चों के नजरिए से सब्जी अच्छी नहीं बनती, लेकिन फिर भी वे उसे खाना चाहते हैं, वो स्कूल जाना चाहते हैं। बच्चे नहीं चाहते कि मध्याह्न भोजन बंद कर दिया जाए। बच्चे और उनके माता-पिता कहते हैं कि स्कूल में पढ़ाई तो होती नहीं और यदि खाना मिलना बंद हो गया तो वो स्कूल जाकर भी क्या करेंगे। उनके नजरिए से स्कूल जाने का मुख्य कारण मध्याह्न भोजन व्यवस्था ही है, न कि पढ़ाई। वह स्कूल जाने के अपने मुख्य लक्ष्य से भटक रहे हैं।

## 7. मध्याह्न भोजन की सीमाएं

- स्कूल में मिलने वाले भोजन की गुणवत्ता अच्छी न होना तथा पका हुआ भोजन स्वादिष्ट न होना।
- केवल तीन चार चीजों का ही मेन्यू में शामिल होना तथा प्रत्येक सप्ताह में वही मेन्यू दो बार मिलना, मेन्यू में कोई परिवर्तन न होना।
- शिक्षकों का बच्चों को समय सारणी से न पढ़ाना तथा स्कूल आने के मुख्य उद्देश्य पढ़ाई से उनका विमुख होना।
- रोज बच्चों के स्कूल जाने और पूरे समय स्कूल में रहने के बावजूद भी बच्चों को पढ़ाना नहीं आता, वो अक्षर तक नहीं पहचान पाते। इसका मतलब स्कूल में बच्चों को पढ़ाया नहीं जाता। वो स्कूल सिर्फ खाना खाने जाते हैं और खाना खाकर वापस आ जाते हैं।
- शिक्षकों का स्कूल में बच्चों से भेदभाव का नजरिया सही नहीं है। यह नजरिया उनकी संकीर्ण मानसिकता का परिचय देता है।
- सभी शिक्षकों का बच्चों को साफ-सफाई और अच्छी आदतों के विकास के बारे में न बताना।

## 8. सुधारात्मक सुझाव

- स्कूल में मिलने वाला भोजन गुणवत्तापूर्ण तथा स्वादिष्ट भी हो। सप्ताह में किसी भी दिन का मेन्यू समान न हो, तथा मेन्यू में विभिन्नता हो। मेन्यू में समय-समय पर परिवर्तन हो।
- सारे स्कूलों में पढ़ाई के लिए एक समय सारणी हो, जिसके अनुसार ही पढ़ाई करवाई जाए तथा इस समय सारणी के बारे में बच्चों को ठीक से पता होना चाहिए।

- बच्चों को साफ-सफाई और अच्छी बातों के बारे में हमेशा शिक्षकों को जानकारी देते रहना, जिससे उनमें अच्छी आदतों का विकास हो।
- शिक्षकों को भेद-भाव वाले संकीर्ण नजरिए को बदलना होगा जिससे समभाव से सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जा सके।
- प्राथमिक विद्यालयों को सिर्फ गरीबों के स्कूल के रूप में ही पहचान न मिले। कोटारी आयोग (1964) के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों को मोहल्ला स्कूल के रूप में विकसित किया जाए, जिसमें एक मोहल्ले के सभी वर्गों और जातियों के बच्चे शिक्षा ग्रहण करें, जिससे समानता के भाव से उन सीमान्त बच्चों को भी समान अवसर प्राप्त हो सके।
- स्कूलों में शिक्षा और सीखने से सम्बन्धित सुविधाएं जैसे विभिन्न प्रकार के क्रियात्मक खेल, क्रियात्मक कला और क्राफ्ट आदि कार्य कराए जाएं, जिससे उनमें क्रियात्मकता बढ़े। अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की तरह शिक्षा के लिये ज्यादा से ज्यादा कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाए, जिससे वो भी मुफ्त में अच्छी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण कर पाएं।

## 9. निष्कर्ष

मध्याह्न भोजन व्यवस्था भारत सरकार की एक बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है। जो कि गरीब बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ एक समय का भोजन देकर उनकी पोषणीयता को बढ़ाकर उनकी क्षमताओं को बढ़ा रही है। इससे भुखमरी में भी कमी हो रही है। लेकिन मध्याह्न भोजन व्यवस्था के कार्यान्वयन में हो रही विभिन्न कमियों जैसे कि भोजन की गुणवत्ता अच्छी न होना, भोजन स्वादिष्ट न होना, बहुत ही सीमित चीजें मेन्यू में होना, भोजन खाने से बच्चों का बीमार हो जाना या उनकी मृत्यु हो जाना, खाना बनाने में सफाई का ध्यान न रखा जाना तथा खाना मिलने से बच्चों की पढ़ाई पर विपरीत प्रभाव पड़ना आदि की वजह से यह अपने सभी उद्देश्यों को पूर्णतः प्राप्त करने में असमर्थ हो रही है। मध्याह्न भोजन व्यवस्था के क्रियान्वयन की सीमाएं इसकी विफलता की कहानी को सामने ला रही हैं। मध्याह्न भोजन योजना बहुत अच्छी है तथा यदि इसे सही से कार्यान्वित किया जाए तो यह अपने उद्देश्यों को पाने में सफल हो सकती है। भारत जो कि एक अल्पविकसित देश है, जहाँ की लगभग 29: जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही है। इस योजना से इनके बच्चों को एक गुणात्मक मानव संसाधन बनाकर भारत को विकसित करने में ज्यादा मदद मिलेगी। किन्तु मध्याह्न भोजन योजना के प्रारूप एवं क्रियान्वयन व्यवस्था को इस प्रकार प्रभावकारी बनाने की आवश्यकता है जिससे कि यह कार्यक्रम प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षा हेतु सार्थक उत्प्रेरक की भूमिका निभा कर सार्वभौम प्रवेश, उपस्थिति अधिगम तथा सबके लिये स्वास्थ्य जैसे सामाजिक आर्थिक लक्ष्यों की पूर्ति कर सकें।

## References

1. Bhargava M, Kandpal SD, Aggarwal P, Sati H. A Comparative Study of Mid-Day Meal Beneficiaries and Private School Attendees. *Indian Journal of Community Health*. 2014; 26(6):223-227.
2. Bhoite R, Iyer U. Operational Research on Mid Day Meal Program and Its Outcome on Growth of School Children in Rural Area. *International Journal of Applied Biology and Pharmaceutical Technology*. 2011; 2(2).
3. Bonds S. Food For Thought: Evaluating the Impact of India's Mid Day Meal Program on Educational Attainment'. *Unpublished Thesis*, University of California (Berkeley). 2012.

4. CAG. Audit Evaluation of Mid-Day Meal Scheme. 2009, 24-26.  
[www.cag.gov.in/sites/default/files/cagpdf/compedium\\_performance\\_audit\\_reviews\\_evaluation\\_midday\\_meal\\_scheme.pdf](http://www.cag.gov.in/sites/default/files/cagpdf/compedium_performance_audit_reviews_evaluation_midday_meal_scheme.pdf)
5. Deodhar SY, Mahandiratta S, Ramani KV, Mavalankar D, Ghosh S, Braganza V. An Evaluation of Mid Day Meal Scheme. *Journal of Indian School of Political Economy*. 2010; 22(1-4):33-49.
6. Kothari Aayog. 1964.  
<https://hi.wikipedia.org/wiki/dksBkjh&vk;ksx>
7. Lath Rahul. Analysis of Mid Day Meal Scheme and School Health Clinics. CCS Working Paper on State of Education Schemes in Mumbai. 2006; 165:17. (www.ccs.in).  
[http://ccs.in/internship\\_papers/2006/Education%20schemes%20in%20Mumbai%20-%20Rahul.pdf](http://ccs.in/internship_papers/2006/Education%20schemes%20in%20Mumbai%20-%20Rahul.pdf)
8. MEAL CMD. Performance Evaluation of Cooked Mid-Day Meal (CMDM). 2010.
9. Paul PK, Mondal NK. Impact of Mid-Day Meal Programme on Academic Performance of Students: Evidence from Few Upper Primary Schools of Burdwan District in West Bengal. *International Journal of Research in Social Sciences*. 2012; 2(3):391-406.
10. Singh M, Mishra N. Evaluation Study on Mid Day Meal Programme in Meghalaya. Council for Social Development. 2010.
11. Uma. Mid Day Meal Scheme & Primary Education in India: Quality Issues. *International Journal of Scientific & Research Publications*. 2013; 3(11).
12. Ramteke V. A Study on Impact of Mid Day Meal Scheme in Government Aided Schools of Nagpur City. *Gurukul International Multidisciplinary Research Journal*, 2015; 1(5):54-58.
13. Verma L. Impact of Mid Day Meal Programme in India: A Review. *International Journal of Multidisciplinary Approach & Studies*. 2015; 2(1).